International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 924-925

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(10): 924-925
www.allresearchjournal.com
Received: 19-08-2020
Accepted: 17-09-2020

बिकेश कुमार
मैथिली विभाग, ति0 मा0 भागलपुर, विश्व0, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
बिकेश कुमार
मैथिली विभाग, ति0 मा0 भागलपुर, विश्व0, भागलपुर, बिहार, भारत

मंत्रपुत्रक वैशिष्ट

बिकेश कुमार

प्रस्तावनाः

'मंत्रपुत्र' शीर्षक उपन्यास सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, कथाकार, कवि, गीतकार, विद्वान समीक्षक–विश्लेषक तथा ओजस्वी मैथिली आन्दोलनकारी डॉ0 मायानन्द मिश्रक अछि। हिनक जन्म सहरसा जिलान्तर्गत बनौनियाँ नामक गाममे 1934 ई0मे छन्हि। हिनक पिताक नाम बाबू नन्दन मिश्र छलन्हि।

'मंत्रपुत्र' उपन्यास संकल्प लोक लहेरियासरायक दिससँ 1986 ई0मे प्रकाशित भेल छल आओर 1988 ई0मे साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत भेल छल। एतबे नहि एहि पोथीपर हिनका बिहार सरकार द्वारा ग्रियरसन पुरस्कारसँ सेहो पुरस्कृत कयल गेल छलन्हि। ई भारतक इतिहासक ऋग्वैदिक काल–खंडपर रचित उपन्यास थिक जाहिमे सरस्वती तटसँ यमुना तट धरिक आर्य प्रसारक आओर कुरुक्षेत्रकेर निर्माणक कथाक वर्णन अछि। एहि उपन्यासक कथा–वस्तु महाभारतसँ किछु पूर्वक स्थितिपर आधारित अछि। एहि प्रसंग स्वयं लेखकक विचार द्रष्टय अछि–

''इतिहास लेखन मे आ0डी0डी0 कौसम्बीक पश्चात् परिवर्तन भेल अछि, से जानि लेब आवश्यक। आब समाजक अध्ययन, इतिहासक मुख्य उद्देश्य भ' गेल अछि, आर्थिक आधार थिक जे समाजमे क्रांति आनि दैत अछि। समाज बदलि जाइत अछि। उत्पादक प्रणाली कोन प्रकारेँ समाज केँ परिवर्तित करैत अछि, यैह देखब समकालीन इतिहास लेखनक दायित्व थिक।"[1]

मंत्रपुत्रमे एहने समकालीन इतिहास बोध अछि। अपितु हमर समस्त ऐतिहासिक रचनाक पाछाँ यैह इतिहास बोध कार्य क' रहल अछि। 'मंत्रपुत्र' पोथीक संग–संग 'प्रथमं शैल पुत्री च' तथा 'पुरोहित' मे एहि भौतिकवादी दृष्टिये समाज अध्ययन प्रस्तुत कयल गेल अछि। ई कहबाक आवश्यकता नहि अछि जे प्राचीन भारतक मुख्यरूप सँ बौद्ध काल खंडसँ पूर्वक इतिहास, राजनीतिक विश्लेषण नहि बल्कि सांस्कतिक इतिहास थिक। प्राचीन भारतक राजनीतिक इतिहास मगध साम्राज्यवादक संगहि जन्म लैत अछि। डा0 एच0 सी0 राय चौधरी प्राचीन भारतक राजनैतिक इतिहास तकैत–तकैत राजा परीक्षित धरि जा सकलाह। प्रमाणक अभावमे आगू बढ़ब सम्भवो नहि छल। 'मंत्रपुत्र' पोथीमे परीक्षितसँ लगभग डेढ़ सय बरख आरो पाछुए छी। आर्य प्रसार सरस्वती तटसँ यमुना गंगा दिस भइये रहल अछि। आर्य समाजक सभ्यता आओर परंपराक हिसाबे पशुचरणक वृत्ति आ प्रयासकेँ छोड़ि खेती–गृहस्थीक संस्कृति ओ संस्कार दिय प्रवेश–आवागमन हुअय लागल छल। आर्य–समाजक घर–आँगनमे स्थायित्व आबय लागल अर्थात कहबाक तात्पर्य ई जे ओ लोकनि स्थायी गामक विस्तार क स्थायी रुपसँ रहय लागल छलाह मुदा भू–स्वामी बनब किंवा बनैत छल तकर प्रमाण बुद्ध कालसँ दिग्दर्शित लागल छल। एहिसँ पूर्व ई प्रमाण नहि भेटैत अछि। राजा गत्वर आर्य समुदायक सेनापति ओ नायक होइत छलाह मुदा हुनकर अधिकार–आधिपत्य राजस्वपर नहि होइत छलनि। समाजमे वर्ग स्वर्ण स्पष्ट भ' रहल छल आ ब्राह्मणमे जन्मक सिद्धान्त बद्रमूल भेल जा रहल छलैक, बाँकी–शेष–अवशेष क्षत्रिय ओ वैश्यमे कर्म जे छल आ चारिम वर्ण शूद्र जन्मक नहि भेल छल। आर्य समाज प्रकृति मार्गी छल आ ता धरि मोक्षक कल्पना नहि आयल छल। अनेक प्रकारक शिल्प ओ व्यवसाय अनार्यक हाथमे छल। यैह आर्य समाजक विवशता छल जाहिसँ आर्य–अनार्यक मिलन भेल, दुइ संस्कृति एक्के ठाम विलीन भेल अर्थात मिलल आओर आर्य समाज सेहो मूर्त्तिक पूजक भेल तथा 'हिन्दु' केर जन्म भेल। समाज बदलि गेल आओर राजतंत्रमे दैवी सिद्धान्तक भूमिका बन' लागल, राजा कौलिक हुअय लागल। चारिम वर्ण शूद्रक जन्म भेल कालांतरमे चारिम पुरुषार्थ मोक्षक कल्पना भेल, तदुपरान्त महाभारतकेर घटना काल आबि भेल।"[2]

ऋग्वैदिक भारतमे आर्य–अनार्यक संस्कृतिक मिलन तथा सरस्वती तटसँ यमुना तटक आर्य प्रसार एवं आर्यावर्त्तक जन्मक गाथा थिक जकर समय ईसा पूर्व 14म शताब्दी थिक। एहि पोथीक कथाक आधार ऋग्वैदिककालीन शोध साक्ष्य थिक। आर्य–अनार्यक संस्कृतिक मिलन–प्रक्रियाक लेल प्रमाण स्वरुप ईसा पूर्व 800 रावीक कछेरपर भेल। दाशराय–युद्धक प्रमाण प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि, जे महाभारतसँ लगभग सौ वर्षक पहिने घटनाक्रम पर आधारित अछि।

ओ आगू लिखैत छथि– ''ऋग्वैदिक युग कैं जानबाक लेल ऋग्वेदक अलावे अतिरिक्त कोनो साधने नहि छल। महाभारतसँ सौ वर्ष पूर्व जखन पंचजन भरत, कित्सु, किवि, संजय एवं पुरू सभ मिलि कुरू बनि क' 1300 ईसा पूर्वक आसपास कुरु पांचाल देश बनौलक। मंत्रपुत्रक गाथा ओहि घटनास्थली किंवा घटनाक्रमपर आधारित–अवलम्बित अछि। ई कथा आर्यावतक जन्मक कथा थिक यैह समय जखन पहिने मंत्रक आधारपर, जन्मक आधारपर ब्राह्मण, क्षत्रिय, विशः अर्थात् वैश्य जातिक परम्परा चलि चुकल छल। विस्तारक बाद ई विभाजन आरम्भ भ' गेल छल। आब किछु लोक कर्ममे लागि गेल आ वैह ऋषि–महर्षि आ ब्राह्मण कहबय लागल आर युद्धमे लागल रहैबाला क्षत्रिय। एहि समय धरि विशः छल मुदा वैश्य नहि बनल छल। पुयषथी तटक पश्चात जखन स्थायी गाम बसय लागल छल, आब तीन वर्ग भ' गेल छल। एहि ठाम सरस्वती तट धरि जाइत ब्राह्मण वर्ग जन्मना भ' गेल कर्मणा छुटि गेल।"[3]

मैथिलीक वरेण्य साहित्यकार ललित नायाण मिथिला विश्वविद्यालयक भूतपूर्व प्रति कूलपति प्रो0 उमा नाथ बाबू 'मंत्रपुत्र'क नामक मायानन्द बाबूक उपन्यासपर अपन पहिल प्रतिक्रिया व्यक्त करैत लिखलनि जे समान कृतिक मैथिली साहित्यमे बहुत प्रयोजन छैक, कारण एहि सँ मनोरंजन एवं ज्ञान वृद्धि दुनू न्युनाधिक मात्रामे होयतैक। मंत्रपुत्र'क रचनाक अनेक उद्देश्यमे यैह प्रमुख उद्देश्य छल। वस्तुतः साहित्यक प्रयोजनो थिक, विशेषतः श्रेष्ठ साहित्यक ईसा सँ पूर्व चारिम शताब्दीक अरस्तु सँ ल' क' आइ धरि यैह मान्यता तथा यैह कालजयी रहल अछि। भारतीय काव्यशास्त्र प्रकारान्तर सँ अन्ततोगत्वा एहि बातक समर्थक करैत अछि जे पंडित राज जगन्नाथ कान्ता–सम्मति उपदेश युगे सँ स्पष्ट अछि। ई पूर्व चारिम शताब्दी सँ ल' क' सत्तरह शताब्दी धरिक जे काव्यशास्त्रीय मान्यता जे चिरकाल धरि मान्य रहत तदनकुले मंत्र पुत्रक सार्थकता थिक संभव यैह कहब प्रो0 उमानाथ बाबूक उपदेश छलनि।"[4]

आइ महत्वपूर्ण छैक अपन सभ्यताक आओर संस्कृतिक परंपराक विकास क्रमकैं एक बेर फेरसँ तकबाक, ओकर उचित ढंगसँ तकर विवेचन–विश्लेषण करबाक। एतबे नहि आजुक समयमे एहि आधारपर भारतीय समाजक उत्तरोत्तर विकासक एक टा मनोवैज्ञानिक आधार स्तम्भ तय करब। आर्थिक, सामाजिक आ संस्कृतिक किंवा सांस्कृतिक स्थिति–परिस्थितिकैं केन्द्र बिन्दुमे राखि ऋग्वेदकालीन भारतक बहुत हद धरि जपयबला चित्रांकन कयलनि अछि। ओहि धार्मिक मान्यताक जे आब रूढ़ि अछि, ओहि सामाजिक मान्यताक जे आब अन्धविश्वास अछि– घटना–परिघटनाक कल्पनाशीलताकैं माध्यम बना उपलब्ध एतिहासिक तथ्यसँ ओकर तादातम्य स्थापित क' ओहि मान्यताक तात्कालीन उपादेयता प्रस्तुत करैत एक टा महत्वपूर्ण उपन्यासक सृजन प्रोफेसर (डॉ0) मायानन्द मिश्र कयलनि अछि। माया बाबू ई निरन्तर प्रयास कयने छलाह जे घटनाक माध्यमसँ अपन वैचारिकताक सहयोगसँ वैदिक सभ्यताक आओर संस्कृतिक मानदंडक सामाजिक उपयोगिता पाठककैं बुझाओल जाय। एहि कृतिमे ई सिद्ध करबाक आयास–प्रयास कयल गेल अछि जे आधुनिक समाजवादी चिन्तनक विकासक्रममे भारतीय सभ्यता ओ संस्कृति पुरातन भूमिका सभसँ बेसी महत्वपूर्ण रहल अछि।

'मन्त्रपुत्र' चारिम योजना प्रभावोत्पादक आर वैविध्यपूर्ण अछि कियैक त' रचनाकारक दृष्टि मौलिक रूपसँ आर्य–अनार्यक एकीकरणक विकास गाथाक अंकने–प्रत्यंकनेपर अवलम्बित रहल अछि। एहि लेल एहिमे आर्य–अनार्यक जीवन आर परिवेशक व्यापक चित्रणक बहन्ने एहि दुइ जातिक चरित्रक सृष्टि बड्ड सूक्ष्मताक संग वर्णन–विश्लेषण कयल गेल अछि। स्पष्टतः एहि उपन्यासक मौलिक कथाक आर्यक जिनगीकेर विकासमे समायल अछि। एहि लेल एहि उपन्यासक पात्र सभ आर्य–युगीन परिवेशसँ जुड.ल अछि। राजा वीतिहोत्र, राजा असंग, महर्षि ऋतुर्वित, मन्त्राक्ष, शाश्वती आर ऋजिस्वा प्रस्तुत उपन्यासमे प्रमुख आर्य–चरित्र थिक।

राजा असंग आलोच्च उपन्यासक नायक थिकाह। हिनक चरित्रमे शूरता आओर प्रणय–भावनाकेर मनोहर समन्वय भेल अछि। अपन पैध भाय वीतिदत्यंत्रक निष्कासनक बाद ओ अपन राज्यक सिंहासनपर बैसि शासन–प्रशासनकैं सम्हारैत छथि। ओ राजद्रोहकेर अपराधी नग्नजितक वध करैत छथि। हुनकर सिद्धान्त आओर वैचारिक अर्न्तद्वन्द्वक दास आओर अनार्यक प्रति उत्पन्न न्याय–भावनाकैं एहि सन्दर्भमे तीव्रताक संग उभरैत अछि।"[5]

एहि सम्बन्धमे लेखकक विचार द्रष्टव्य अछि :– "दुनू जन समान थिक? आर्य आ अनार्य समान? आ ई समानताक अधिकार राजा कैं देब' पड़तैक? विदथक इच्छाक विरूद्ध? तैं की राजा विदभ सँ ऊपर अछि? पैध अछि? सर्वोपरि अछि ?"[6]

भारतीय एकता एवं राष्ट्रीय अखण्डता आधुनिक भारतक समरयात्रिक जकर यथोचित निदान लेखक एहि उपन्यासमे प्रस्तुत कयने छथि किन्तु सम्पूर्ण संसारक एखनो समस्या थिक लड़ाइ ओ शान्ति तथा श्वेत आ अश्वेतक प्रसंग माया बाबू एकीकरण आओर युद्धक विरोध करैत अमन–चैन आओर शान्तिकेर संदेश दैत छथि जे हिनकर विश्व राजनीतिक प्रति रचनात्मक दृष्टिक परिचायक थिक। एहि अर्थमे उपन्यास अत्यन्त रचनात्मक आ उपादेय बनि जाइत अछि।

संदर्भ

1 प्रो0 मायानंद मिश्र, मिथिला मिहिर, मासिक जनवरी 1989, पृष्ट सं– 13, 28
2 डा0 संतोष गोयल, खंडे औबजर्बर, 15, 14 मार्च 1991
3 डा0 संतोष गोयल, खंडे औबजर्बर, 15, 14 मार्च 1991
4 मिथिला मिहिर, मासिक जनवरी 1989, पृष्ट सं– 13
5 डा0 महेन्द्र, शिखरिणी, पृष्ट सं– 203, 204
6 प्रो0 मायानंद मिश्र, मंत्रपुत्र, पृष्ट सं– 112